नई सोच, नया आयाम

जोहार छत्तीसगढ़

RNI No. CHHHIN/2009/35020

दैनिक हिन्दी

◆ वर्ष: -14 ◆ अंक: 231 डाक पंजीयन 030/रायगढ़/2015-2017 ◆ मूल्य: 2 ₹ ◆ पृष्ठ : 4

धरमजयगढ़, गुरुवार 30 जून 2022

JOHAR CHHATTISGARH epaper for login www.joharchhattisgarh.in

पेज -3 पर

कोंटा नगर पंचायत में मंत्री कवासी लखमा ने लगाई सौगातों की ...

तहसील अधिकारी एवं कर्मचारी सामूहिक अवकाश पर रहे

पेज -4 पर

एक नजर

डॉक्टर गिरफ्तार

नर्स से करता था छेड़छाड़, नोटिस के बाद भी नहीं सुधरा, फिर की गंदी हरकत तो हुआ गिरफ्तार

जांजगीर-चांपा। छत्तीसगढ़ में एक और डॉक्टर को छेड़छाड़ के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। जांजगीर-चांपा जिले में यह डॉक्टर कई दिनों से एक नर्स से छेड़छाड़ कर रहा था। प्रबंधन ने उसे नोटिस जारी भी किया था। मगर वह नहीं माना। एक बार फिर से उसने जब छेड़छाड़ की तो पीड़िता ने मामले की शिकायत पुलिस से कर दी और उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। मामला चांपा थाना क्षेत्र का है। चांपा के नए बस स्टैंड के पास NKH अस्पताल है। यहां डॉ.लेखचंद साहू(40) पदस्थ है। लेखचंद साहू पहले से शादीशुदा भी है। इस मामले में 40 साल की पीड़ित नर्स ने पुलिस से शिकायत की थी। पीड़ित नर्स भी शादीशुदा है। उसका पति किसी दूसरे जगह रहकर काम करता है। शिकायत में बताया गया कि 17 जून की रात को वह ड्यूटी पर तैनात थी। उस दौरान भी लेखचंद साहू ने उससे जबरदस्ती करने की कोशिश की। काफी विरोध करने पर भी वह नहीं मान रहा था। नर्स वहां से किसी तरह से भागने में कामयाब हुई थी।

कटकोना का मल्टीयूटिलिटी सेंटर स्वावलंबन की ओर महिलाओं का एक मजबूत कदम: मुख्यमंत्री

रायपुर। मूसलाधार बारिश के बाद भी भेंट-मुलाकात में लोगों का उत्साह कम नहीं हुआ है। भेंट-मुलाकात में आस-पास के ग्रामवासी मुख्यमंत्री के समक्ष अपनी बात रखने पहुंचे थे। इस दौरान मूसलाधार बारिश होने लगी मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों से पूछा कि कार्यक्रम बंद करें या जारी रखे। ग्रामीणों ने पूरे उत्साह के साथ भेंट-मुलाकात जारी रखने की सहमति दी। मुख्यमंत्री ने भी

बारिश में ग्रामीणों का उत्साह कम होने नहीं दिया। दरअसल मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल आज कोरिया जिले के मनेन्द्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र के ग्राम कटकोना के ग्रामीणों से भेंट-मुलाकात कर रहे थे। इस दौरान मूसलाधार बारिश शुरू हो गई।

6.75 करोड़ की लागत से बनने वाले बुधरा नदी एनीकट का भूमिपूजन

मुख्यमंत्री ने की चिरमिरी में पॉलिटेक्निक कॉलेज स्थापना की घोषणा

खड़गवां में खुलेगा स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल भेंट-मुलाकात अभियान के तहत आज मनेंद्रगढ़ विधानसभा के ग्राम कटकोना पहुंचे थे। भेंट-मुलाकात के पहले मुख्यमंत्री ने यहां 'कटकोना मल्टीयूटिलिटी सेंटर' का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने इस दौरान बुधरा नदी पर लगभग 6 करोड़ 75 लाख रूपए की लागत से बनने वाले

एनीकट निर्माण का भूमिपूजन किया। इस एनीकट के निर्माण से 33 गांव के 30 हज़ार से ज्यादा लोगों को सिंचाई, पेयजल और निस्तारी के लिए पानी की उपलब्धता होगी।

20 साल पहले इलाज के लिए मेकाहारा गया पति आज तक नहीं लौटा, परिवार आज भी कर रहा इंतजार

जोहार छत्तीसगढ़-देवभोग।

20 साल पहले इलाज के लिए रायपुर के मेकाहारा अस्पताल गया नागलदेही का युवक अब तक घर नहीं लौटा इतना ही नहीं युवक का अब तक कोई पता भी नहीं चल सका पत्नी और परिवार के लोग आज भी इसी उम्मीद में जी रहे है कि कही उनके घर का मुखिया लौट आये।

मिली जानकारी के अनुसार आज से 19 साल पहले नागलदेही के मुकु यादव के ऊगली में बड़ा घाव हो गया था स्थानीय स्तर पर एक साल तक इलाज करवाने के बाद भी मुकु का घाव ठीक नहीं हुआ। दिन ब दिन दर्द बढ़ता जा रहा था और घाव भी बढ़ने लगा था उस दौरान परिवार ने देवभोग अस्पताल में मुकु का इलाज करवाया। इसके बाद बढ़ते घाव को देखकर उस दौरान पदस्थ देवभोग के डॉक्टर ने मुकु को इलाज के लिए रायपुर भेज दिया डॉक्टर के द्वारा रेफर किये जाने के बाद मुकु की पत्नी रेमती और उसकी लड़की गोपबाली मुकु को लेकर रायपुर के मेकाहारा के लिए रवाना हुए वहां उन्होंने मुकु को भर्ती करवाया इसके बाद इलाज भी शुरू हुआ चार दिनों तक इलाज करने के बाद वहां मौजूद कुछ लोगों ने पत्नी और बेटी को धमकाकर वहां से चले जाने को कहा, धमकी से डरकर दोनों मां और बेटी वहां से लौटकर घर वापस आ गए। मुकु की पत्नी का कहना है कि वे 18 साल तक पति का इंतजार करती

रही कि वे लौट आएंगे लेकिन आज तक पति नहीं लौटे और ना ही उनका कोई खबर घर तक पहुंचा। यहां बताते चले कि मुकु का बेटा अशन यादव भी उनको खोजने राजधानी के मेकाहारा अस्पताल गया था। लेकिन उनकी कोई खोज खबर नहीं मिली पत्नी और परिवार को उम्मीद है कि मुकु कही से लौट आएंगे। पति का पता नहीं चला तो तोड़ा चूड़ी, रुंधे गले से मुकु की पत्नी कहती है कि जब बेटा राजधानी से लौटकर आया और बताया कि पिता का पता नहीं चला तो इसके बाद रेमती ने अपने हाथों से अपना चूड़ी तोड़ी रेमती कहती है कि उन्होंने 18 साल तक पतिव्रता व्रत का पालन किया। इसके बाद उन्हें उनके बेटे की शादी भी करनी थी। समाज के बीच यह बात भी उठने लगी थी कि पति के नहीं होने से भी पतीव्रत का पालन वह क्यों कर रही है। ऐसे में जब बेटे ने आकर कह दिया कि पिता का पता नहीं चला तो इसके बाद रेमती ने खुद ही चूड़ी तोड़ने का फैसला लिया।

जोहार छत्तीसगढ़ विशेष खबर

मजदूरी करके चार बच्चों का कर रही पालन-पोषण

रेमती ने बताया कि जब पति उनसे दूर हुए तो उस दौरान उनके ऊपर चार बच्चों की जिम्मेदारी था। वहीं रेमती के परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत कमजोर था। ऐसे स्थिति में भी रेमती ने हार नहीं माना और मजदूरी करके चार बच्चों का लालन पालन किया। रेमती बताती है कि उसने काफी संघर्ष कर अपने चारों बच्चों को पाला है। स्वर्गीय समाजसेवी ने किया था बहुत ज्यादा प्रयास जनपद उपाध्यक्ष सुखचंद बेसरा ने बताया कि जब मुकु का एक साल तक कोई खोज खबर नहीं मिला तो स्वर्गीय समाजसेवी राजेश पाण्डेय ने अपने स्तर पर पहल करना शुरू किया। बेसरा के मुताबिक समाजसेवी ने कई जगह पत्र-व्यवहार किया। इसके बाद उसे ढूढ़ने मेकाहारा तक भी गए लेकिन वहां भी उनका कोई खबर नहीं मिला। जनपद उपाध्यक्ष ने बताया कि उन्होंने भी अपने स्तर पर कई बार मुकु को ढूढ़ने का प्रयास किया था लेकिन उन्हें भी कोई कामयाबी नहीं मिल सका।

अग्निपथ पर षड़यंत्र की शिकायत

रायपुर। छत्तीसगढ़ में अग्निपथ योजना के विरोध और समर्थन की राजनीति में केंद्र सरकार की एजेंसी NIA (नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी) का भी दरवाजा खटखटाया गया है। भाजपा ने बीजापुर से कांग्रेस विधायक विक्रम शाह मंडावी की शिकायत में NIA को एक पत्र भेजा है। इसमें कहा गया है कि कांग्रेस विधायक आदिवासियों को देश के खिलाफ हिंसा के लिए भड़का रहे हैं।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने NIA के निदेशक को पत्र लिखकर विधायक विक्रम मंडावी के भाषण के बारे में बताया है। इस पत्र में कहा गया है, अग्निपथ योजना के विरुद्ध हिंसा भड़काने का षड़यंत्र रचा जा रहा है।

रामकृष्ण केयर हास्पिटल रायपुर के, डॉ. रवि जायसवाल, कैंसर विशेषज्ञ का, राष्ट्रपति स्वर्णपदक से सम्मान

नई दिल्ली। नई दिल्ली में 20 जून 2022 को नेशनल बोर्ड ऑफ एक्जामिनेशन का 21 वां दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ।

इसमें कैंसर चिकित्सा के क्षेत्र मे, राष्ट्रपति स्वर्णपदक, डॉ. रवि जायसवाल कैंसर विशेषज्ञ को, केन्द्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री मान. मनसुख मंडाविया तथा राज्य के मान. स्वास्थ्य मंत्री डॉ. भारती प्रवीण पवार के द्वारा प्रदान किया गया। डॉ. रवि जायसवाल मेडिकल आंकोलाजिस्ट तथा हिमेटोलाजिस्ट कसंलटेंट के रूप मे, वर्तमान मे रामकृष्ण केयर हास्पिटल, रायपुर मे कार्य कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति स्वर्णपदक चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र मे, शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिये प्रदान किया जाता है। डॉ. रवि जायसवाल, कैंसर को विशेषज्ञ के रूप में एक अन्य गोल्डमेडल से, मेडिकल आंकोलाजी में, श्री हरीश राव थन्नीरी (मान. वित्त एवं स्वास्थ्य मंत्री, तेलंगाना सरकार) तथा श्री नंदमुरी बालकृष्ण (अध्यक्ष, अभिनेता तथा राजनेता) के हाथों सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सुब्रमणीश्वर राव (बी आई ए सी एच आर आई के मेडिकल डायरेक्टर) डॉ. सेंथिल राजाप्पा BIACHRI के हैदराबाद मेडिकल्स आंकोलाजी के एचओडी तथा सीईओ प्रभाकर राव आदि उपस्थित थे। डॉ. रवि जायसवाल ने अपने सम्मान के लिये सभी का आभार व्यक्त किया। रामकृष्ण कैंसर हास्पिटल के मैनेजिंग व मेडिकल डायरेक्टर डॉ. संदीप दवे एवं हास्पिटल के सभी डाक्टर्स व स्टाफ ने, डॉ. रवि जायसवाल को इस उपलब्धि के लिये बधाई दी।

7500 लोगों को मिला लाखों के छूट का लाभ

भिलाईनगर । नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र अंतर्गत महापौर नीरज पाल की पहल से पांच धन्वंतरी मेडिकल स्टोर खुल चुके हैं जहां पर सस्ती दरों में उच्च गुणवत्ता की दवाइयां लोगों को प्राप्त हो रही है। वही छत्तीसगढ़ के अन्य जिलों से भी लोग धन्वंतरी मेडिकल स्टोर भिलाई में आकर दवाइयां खरीद रहे है। कुछ समय पूर्व से छत्तीसगढ़ के आखिरी छोर बीजापुर से एक व्यक्ति मेडिकल का रेगुलर ग्राहक बना हुआ है, अशोक प्रधान कुमार ने मेडिकल में दवाई लेते हुए बताया कि बीजापुर में धन्वंतरी मेडिकल स्टोर नहीं होने के कारण जब भी भिलाई आने का मौका मिलता है मैं 3 महीने का स्टॉक लेकर अपने निवास बीजापुर जाकर दवाइयों की जरूरतों को पूरा करता हूं। उन्होंने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी का आभार जताया कि ऐसी योजना का लाभ लोगों को मिल रहा है जिसमें छूट के साथ अच्छी गुणवत्ता की दवाइयां प्राप्त हो रही है।

एडवेंचर पार्क के झूले में हादसा

मासूम के जांघ की हड्डी के हुए दो टुकड़े

रायपुर। मोवा स्थित इंडियास फर्स्ट इंडोर एडवेंचर एंड ट्रंपोलिन पार्क (पूनो) में रविवार की दोपहर बड़ा हादसा होने से मासूम की जान पर बन आई। हादसे में मासूम की जांघ की हड्डी के दो टुकड़े हो गए। परिजनों ने मासूम को उपचार के लिए निजी अस्पातल में भर्ती कराया है। सोमवार को उसका ऑपरेशन किया गया। मासूम के साथ हुए इस हादसे से परिजन सदमे है। परिजनों ने प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाया है।

घटनाक्रम

दुर्ग से रायपुर रिश्तेदार के बर्थडे कार्यक्रम में शामिल होने आया था। रिश्तेदार बर्थडे सेलीब्रेशन के बाद मूवी देखने चले गए, तो बेटे की जिद पर उसे मोवा स्थित इंडियास फर्स्ट इंडोर एडवेंचर एंड ट्रंपोलिन पार्क पहुंचा। पूनो पार्क में बेटे डोनट

स्लाइड गेम कर रहा था। इस दौरान वो खिसकते हुए नीचे बने बैग में गिरा और जोर-जोर से रोने लगा। बेटे के चिल्लाने पर उसके पास पहुंचा, तो उसने जांघ में बहुत तेज दर्द होने की जानकारी दी। मैने पूनो प्रबंधन के मैनेजर को कर्मचारियों से बुलवाया। मैनेजर मौके पर पहुंचे और रोप कोर्स गेम के पास पर्देनुमा जगह पर लेकर पहुंचे वहां पर बेड में लिटाया और गत्ते का कागज बेटे की जांघ पर लगाकर पट्टी बांधी। मैनेजर ने पूछा अस्पताल कैसे जाओगे? मेरे पास अल्टो गाड़ी है, तो मैंने एंबुलेंस बुलाने के लिए कहा। मैनेजर ने एंबुलेंस को फोन किया और वो एक घंटे बाद पहुंची। एक घंटे तक मेरा बेटा दर्द से तड़पता रहा और मैं केवल मदद मांगता रहा। एंबुलेंस आई, तो मैनेजर को साथ आने के लिए कहा। मैनेजर ने पहले कर्मचारी भेजने की बात कही, लेकिन दोबारा कहने पर अस्पताल साथ आए। अस्पताल में बेटे का इलाज शुरू किया गया, लेकिन रविवार को रात भर मेरा बेटा दर्द से तड़पता रहा। सोमवार को डॉक्टरों ने ऑपरेशन किया, उसके बाद भी बेटा दर्द सह रहा है।

सोशल मीडिया से हटवाया पोस्ट- बेटे के साथ हुए हादसे को कारोबारी ने सोशल मीडिया में डाल दिया। सोशल मीडिया में कारोबारी को पोस्ट वायरल हुआ, तो पूनो प्रबंधन का मैनेजर सोमवार को उनके पास पहुंचा और सोशल मीडिया में अपलोड किए पोस्ट को हटवाया। कारोबारी ने पत्रिका से आपीबीती बताने के दौरान कहा, कि पूनो में यह पहला हादसा नहीं है। इससे पहले भी कई हादसे हो चुके है।

अब तक हादसे की कोई भी शिकायत नहीं आई है। शिकायत आने पर जांच करके दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। पंडरी निरीक्षक को मामले का पता लगवाने का निर्देश देता हूं। - विरेंद्र चतुर्वेदी, सीएसपी, सिविल लाइन

खुलासा... **2.34 करोड़ रूपये अब तक हुए जब्त**

एक्सिस बैंक फर्जीवाड़ा में अब तक 8 गिरफ्तार

रायपुर। एक्सिस बैंक फर्जीवाड़ा मामले में अब तक 2 करोड़ 34 लाख रुपये पुलिस जब्त कर चुकी है। रायपुर के मुजगहन थाना क्षेत्र के एक्सिस बैंक ब्रांच में फर्जी तरीके से चेक बुक जारी कर करीब 16 करोड़ 40 लाख रूपये अलग-अलग बैंक खातों में ट्रांसफर किया।

पुलिस ने इस मामले में 8 आरोपियों को अब तक गिरफ्तार किया है। दरअसल बी आनंद कलस्टर हेड एक्सिस बैंक रायपुर ने थाना मुजगहन में रिपोर्ट दर्ज कराया कि छ.ग. राज्य कृषि मण्डी बोर्ड के बैंक खाता क्रमांक 900010025774139 जिसमें सतीश वर्मा एवं चन्द्रभान सिंह ने अपने सहयोगी अन्य लोगों के साथ मिलकर फर्जी तरीके से चेक बुक जारी कराकर, चेक बुक के माध्यम से फर्जी तरीके से रकम स्थानांतरित कराया।

उन्हीं चेक बुक के माध्यम से अन्य बैंक खातों में फर्जी तरीके से रकम स्थानांतरित कराया। इस प्रकार आरोपियों द्वारा बैंक को गलत तरीके से नुकसान पहुंचाने और बेईमानी के ईरादे से स्वयं के लाभ के लिए अवैधानिक तरीके से छल कर कूटरचना कर बैंक से करीबन 16,40,12,655/- रूपये का धोखाधड़ी किये। जिस पर आरोपियों के विरूद्ध थाना मुजगहन में अपराध क्रमांक 105/22 धारा 420, 467, 468, 471, 34, 120बी, 409, 419 भादवि. का अपराध पंजीबद्ध किया गया।

जोहार छत्तीसगढ़ विशेष खबर

इस मामले में मंडी बोर्ड के एमडी भुवनेश यादव ने छत्तीसगढ़ उजाला से बात करते हुए बताया कि एक्सिस बैंक के खाते से मंडी बोर्ड का पैसा निकलने के बाद वरिष्ठ अधिकारियों को जानकारी दी गई साथ ही हमारे द्वारा कड़े कदम उठाते हुए बैंक से पैसा हमारे खाते में वापस करने के लिए पत्र व्यवहार किया गया।अधीनस्थों से भी पूछताछ की गई।बैंक वालो ने अपनी गलती स्वीकारते हुए हमारे खाते में 16 करोड़ 40 लाख 12 हजार 655 रुपये वापस कर दिए। इस पूरे मामले में मंडी बोर्ड के किसी भी अधिकारी व कर्मचारी की कोई भी गलती नही थी।बैंक ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए हमारे खाते के पैसे हमारे बैंक अकाउंट में वापस कर दिए।अब इस मामले में मुझे कुछ भी नही कहना है।

किसान तो आखिर किसान है...!

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पाराडोल की धरती पर बोया सोनम धान

रायपुर। छत्तीसगढ़ के किसान मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल खेत में नांगर-बइला (हल और बैल) देखकर खुद को रोक नहीं पाए। आज किसान को खेत में हल चलाते और धान बुवाई करते देख वे स्वयं खेत में उतर गए। उन्होंने किसान के हाथ से हल का मूठ थामा और खुद हल चलाने लगे। उन्होंने खेत में धान का छिड़काव कर बुवाई भी की। कभी हल चलाते दिखते हैं आज उन्होंने पाराडोल में कोटवार के खेत मे हल चलाकर धान की बुआई की। लोगों से भेंट-मुलाकात के लिए आज मनेन्द्रगढ़ विधानसभा के पाराडोल पहुंचे मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल कार्यक्रम स्थल से सटे खेत में धान बुवाई होते देख

खुद हल चलाकर खेत की जुताई भी की

वहां पहुंच गए। उन्होंने खेत में हल चलाकर सोनम धान की बुवाई की। यह खेत गांव के कोटवार श्री भागीरथी को कोटवारी जमीन के रुप में मिली हुई है। उनके पिता और दादा ने भी गांव में कोटवारी की थी और वे इस जमीन पर तब से ही खेती करते आ रहे हैं।

पार्टी की आउटसोर्सिंग और शिवसेना का 'होस्टाइल टेकओवर'?

महाराष्ट्र सियासत

शिवसेना को महज़ एक परिवार की पार्टी मान लेने वाले बड़ी भूल करते हैं। ज़मीन पर शिवसेना परिवार से ज़्यादा विचारधारा की पार्टी है।इसकी जड़ें मुंबई की शिवसेना शाखाओं में है जिसे बाल ठाकरे ने अपने विचारों से बनाया।

भारत की राजनीति में यह पहला मौक़ा नहीं है जब किसी पार्टी का 'होस्टाइल टेकओवर' करने की कोशिश की गई हो। 1969-70 में इंदिरा गांधी की कांग्रेस के टेकओवर की कोशिश एक तरह से नाकाम रही, मगर लगता है शिवसेना पहली पार्टी होगी जिसका 'शत्रुतापूर्ण अधिग्रहण' सफ़ल हो जाएगा। उद्धव ठाकरे ने अपनी साझा सरकार ही नहीं बल्कि शिवसेना पार्टी के फ़ैसले भी 'आउटसोर्स' कर दिए थे। दरअसल, एनसीपी चीफ़ शरद पवार ही असली सुप्रीमो बन गए थे। तो क्या यह एक तरह से शिवसेना पार्टी की ही आउटसोर्सिंग की कोशिश थी

राजनीति और सत्ता के कम अनुभवी उद्धव ठाकरे के लिए यह आरामदेह स्थिति थी। ख़ासकर तब जबकि उनकी टक्कर राजनीति की खूंख़ार पार्टी बीजेपी से हो गई थी। पवार और ठाकरे परिवार की नज़दीकियों की कुछ और वजहें भी बताई जाती हैं मगर वह निजी बातें हैं। दरअसल, शुरू में सत्ता का सुख सभी को अच्छा लगा, मगर धीरे-धीरे शिवसेना के स्थानीय मगर मज़बूत नेताओं को लगने लगा कि सुप्रीमो उद्धव नहीं पवार हैं। ऐसी तमाम बातें शिवसेना बाग़ी विधायक कह चुके हैं। शिवसेना को महज़ एक परिवार की पार्टी मान लेने वाले बड़ी भूल करते हैं। ज़मीन पर शिवसेना परिवार से ज़्यादा विचारधारा की पार्टी है। इसकी जड़ें मुंबई की शिवसेना शाखाओं में है जिसे बाल ठाकरे ने अपने विचारों से बनाया। बाल ठाकरे का वचन और उनकी विचारधारा में कभी कोई मतभेद नज़र नहीं आया, इसलिए शिवसैनिकों के लिए बाल ठाकरे महज़ एक चेहरा नहीं आकाशवाणी थे। शिवसेना में पहले भी छगन भुजबल और नारायण राणे जैसे बाग़ी हुए हैं - लेकिन 2022 की बग़ावत सत्ता ही नहीं बल्कि पूरी शिवसेना पार्टी हथियाने के लिए हुई है।

पार्टी के अधिग्रहण से आएगी सत्ता

साल 2019 में बीजेपी ने एनसीपी के बाग़ी अजीत पवार के साथ महाराष्ट्र की सत्ता पाने की नाकाम कोशिश की। अजीत, चाचा शरद पवार के पास पहुंच गए। बीजेपी से घबराए उद्धव ठाकरे और ग़ुस्साए शरद पवार ने समझदारी से सत्ता क़ायम कर ली, तब से लेकर आज तक बीजेपी ने कई तरह के दांव लगाए जिससे महाराष्ट्र में ठाकरे की साझा सरकार गिर जाए और शिवसेना के पास घर वापसी के अलावा कोई चारा न बचे। इस बीच मध्य-प्रदेश मॉडल से लेकर गोवा-मणिपुर-मेघालय मॉडल तक की चर्चा और कोशिशें हुईं, मगर फिर आइडिया के स्टाक मार्केट से 'टेकओवर' का विचार प्रकट हुआ।

'टेकओवर' के बाद ठाकरे मार्का

हालांकि बस चर्चा है - मगर इसके दो पहलू हैं। अगर एकनाथ शिंदे ग्रुप शिवसेना पार्टी पर क़ाबिज़ हो पाता है या अगर वो दूसरी शिवसेना भी खड़ी करते हैं तो उन्हें एक ठाकरे चेहरा चाहिए। राज ठाकरे वो चेहरा हैं जो नई शिवसेना को वैधता दे सकते हैं, तो क्या शिवसेना पार्टी के अधिग्रहण के बाद राज ठाकरे अपनी पार्टी स्ट्रक्चर का विलय कर देंगे? या फिर शिवसेना के बाग़ी विधायक राज ठाकरे की पार्टी में शामिल हो जाएंगे?

क्या राज ठाकरे का चेहरा उद्धव ठाकरे की शिवसेना का स्ट्रीट पावर ख़त्म कर सकता है? मगर क्या बीजेपी के ज़्यादा मज़बूत और अख्खड़ राज ठाकरे को पावरफुल बनाने का रिस्क लेगी? वैसे लोहे को लोहा ही काटता है और फिर उस लोहे को काटने के लिए एक नया लोहा लाया जा सकता है।

मनोज सिंह

संपादकीय

योग का विरोध क्यों?

मालदीव की राजधानी माले में एक अजीब-सा हादसा हुआ। 21 जून को योग-दिवस मनाते हुए लोगों पर हमला हो गया। काफी तोड़-फोड़ हो गई। कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया गया। मालदीव में यह योग-दिवस पहली बार नहीं मनाया गया था। 2015 से वहां बराबर योग-दिवस मनाया जाता है। उसमें विदेशी कूटनीतिज्ञ, स्थानीय नेतागण और जन-सामान्य लोग होते हैं। इन योग-शिविरों में देसी-विदेशी या हिंदू-मुसलमान का कोई भेद-भाव नहीं किया जाता है। इसके दरवाजे सभी के लिए खुले होते हैं। यह योग-दिवस सिर्फ भारत में ही नहीं मनाया जाता है। यह दुनिया के सभी देशों में प्रचलित है, क्योंकि संयुक्तराष्ट्र संघ ने इस योग-दिवस को मान्यता दी है। मालदीव में इसका विरोध कट्टर इस्लामी तत्वों ने किया है। उनका कहना है कि योग इस्लाम-विरोधी है। उनका यह कहना यदि ठीक होता तो संयुक्तराष्ट्र संघ के दर्जनों इस्लामी देशों ने इस पर अपनी मोहर क्यों लगाई है? उन्होंने इसका विरोध क्यों नहीं किया? क्या मालदीव के कुछ उग्रवादी इस्लामी लोग सारी इस्लामी दुनिया का प्रतिनिधित्व करते हैं? सच्चाई तो यह है कि मालदीव के ये विघ्नसंतोषी लोग इस्लाम को बदनाम करने का काम कर रहे हैं। इस्लाम का योग से क्या विरोध हो सकता है? क्या योग बुतपरस्ती सिखाता है? क्या योगाभ्यास करने वालों से यह कहा जाता है कि तुम नमाज़ मत पढ़ा करो या रोजे मत रखा करो? वास्तव में नमाज और रोज़े, एक तरह से योगासन के ही सरल रूप हैं। यह ठीक है कि योगासन करने वालों से यह कहा जाता है कि वे शाकाहारी बनें। शाकाहारी होने का अर्थ हिंदू या काफिर होना नहीं है।

बाढ़ से निपटने की रणनीति, जलवायु परिवर्तन का मुद्दा ध्यान रखना होगा

सही हो या गलत, कुछ आपदाओं पर दूसरों की तुलना में ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इसकी कई वजहें हैं। आपदा के कवरेज का स्तर और तीव्रता वास्तविक पीड़ा के पैमाने के बजाय निकटता, लोगों की रुचि और इसमें शामिल आर्थिक दांव पर निर्भर करता है। निश्चित रूप से देश के कुछ हिस्सों या समुदायों को तभी पहले पन्ने पर या प्राइमटाइम टीवी में जगह मिलती है, जब आपदा इतनी बड़ी हो कि इसे नजरंदाज या कम करके आंका नहीं जा सकता है।

यही चीज मुझे असम या पूर्वोत्तर के कुछ हिस्सों या पड़ोसी बांग्लादेश की विनाशकारी बाढ़ में दिखती है। हजारों मील दूर महाराष्ट्र में चल रहे सियासी संकट का केंद्र बन जाने के कारण असम अभी चर्चा में है। इसके मद्देनजर असम के मुख्यमंत्री राज्य पर्यटन की संभावनाओं को लेकर काफी मुखर रहे हैं, लेकिन तथ्य यह है कि असम के कुछ हिस्सों में बाढ़ के कारण आम लोगों की स्थिति बहुत गंभीर है और वे तत्काल बचाव की जरूरत महसूस कर रहे हैं। यह लेख लिखे जाने के समय तक असम में बाढ़ से 127 लोगों की मौत हो चुकी है और जब तक यह प्रकाशित होगा, मरने वालों की संख्या बढ़ चुकी होगी। असम में बराक घाटी के कछार जिले का मुख्यालय सिलचर लगातार सातवें दिन पांच से आठ फीट पानी में डूबा हुआ है और करीब दो लाख लोग भोजन, पानी और अन्य जरूरी चीजों की कमी का सामना कर रहे हैं। बांग्लादेश में बाढ़ से मरने वालों की संख्या 80 पार कर गई है। असम में बाढ़ का मीडिया कवरेज उम्मीद के मुताबिक, दुर्गम क्षेत्रों में राहत के प्रावधान और बचाव व राहत कार्यों के अंतर पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के समय में हमें प्राकृतिक आपदाओं को न केवल तत्काल बचाव और राहत कार्य के चश्मे से देखना चाहिए, बल्कि तैयारियों की दृष्टि से भी देखना चाहिए। कोई जिला या राज्य या देश जिस हद तक आपदाओं के प्रति संवेदनशील होता है, उसका इस बात से काफी कुछ लेना-देना होता है कि वह ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए कितना तैयार है।

मौसम की मार

महाराष्ट्र, तमिलनाडु, ओडिशा, कर्नाटक और गुजरात जैसे अति संवेदनशील राज्यों ने हाल के वर्षों में अपने डीडीएमपी और जलवायु-रोधी महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे में सुधार किया है। यह राजनीतिक और प्रशासनिक प्राथमिकताओं और आपदा तैयारियों की पूर्ण तात्कालिकता की तरफ हमारा ध्यान खींचता है।

पिछले वर्ष भारत की जलवायु भेद्यता (संवेदनशीलता) का मानचित्रण करने वाली एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट आई थी, जिसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। दिल्ली स्थित थिंक टैंक ऊर्जा, पर्यावरण एवं जल परिषद (सीईईडब्ल्यू) के जलवायु संवेदनशीलता सूचकांक के अनुसार, असम, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और बिहार बाढ़, सूखा या चक्रवात जैसी चरम जलवायु घटनाओं के लिए सबसे अधिक संवेदनशील हैं। कुल मिलाकर, 27 भारतीय राज्य और केंद्र शासित प्रदेश चरम जलवायु घटनाओं की चपेट में फंसे हैं, जो अक्सर स्थानीय अर्थव्यवस्था को बाधित करते हैं और कमजोर समुदायों को विस्थापित करते हैं। 80 प्रतिशत से अधिक भारतीय जलवायु जोखिम के प्रति संवेदनशील जिलों में रहते हैं। कुछ और आंकड़ों को देखिए-भारत के 640 जिलों (2011 की जनगणना) में से 463 जिले अत्यधिक बाढ़, सूखे और चक्रवातों की चपेट में हैं। चिंतित करने वाली बात यह है कि इनमें से 45 प्रतिशत से अधिक जिलों में अस्थिर परिदृश्य और बुनियादी ढांचे में बदलाव आया है। सीईईडब्ल्यू का अध्ययन रेखांकित करता है कि मात्र 63 फीसदी भारतीय जिलों के पास जिला आपदा प्रबंधन योजना (डीडीएमपी) है। इन योजनाओं को हर साल अद्यतन करने की आवश्यकता होती है, लेकिन उनमें से केवल 32 प्रतिशत जिले के पास ही 2019 तक अद्यतन योजनाएं थीं।

पत्रलेखा चटर्जी

मिला जुला

देश में फिर पैर पसार रहा कोरोना

24 घंटे में 23.0% बढ़े केस, 30 लोगों की हुई मौत

नई दिल्ली. कोरोना के केस एक बार फिर बढ़ने लगे हैं. पिछले 24 घंटे में देश में कोरोना के 14,506 मामले दर्ज किए गए हैं. कल की तुलना में ये 23.0त्न ज्यादा हैं. अब तक देश में कोरोना के 4,34,33,345 मामले सामने आ चुके हैं.

वहीं, पिछले 24 घंटे में कोरोना से 30 लोगों की मौत हुई है. इससे पहले मंगलवार को देश में 11,793 केस दर्ज किए गए थे.

1 लाख के करीब एक्टिव केस

देश में एक्टिव केस बढ़कर 1 लाख के करीब पहुंच गए हैं. देश में पिछले 24 घंटे में 2902 एक्टिव केस बढ़े हैं. कुल एक्टिव केस 99,602 पहुंच गए हैं.

5 सबसे संक्रमित राज्यों की बात करें, तो महाराष्ट्र में 3,482, केरल में 2,993 , तमिलनाडु में 1,484, कर्नाटक में 968 और बंगाल में 954 केस मिले हैं. यानी देश में कुल मिले केसों में 68.11त्न इन्हीं 5 राज्यों में मिले हैं. महाराष्ट्र में अकेले 24.0त्न केस मिले हैं.

पिछले 24 घंटे में कोरोना से 30 लोगों की मौत हुई है. अब तक देश में कोरोना से 5,25,077 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं. भारत में रिकवरी रेट अभी भी 98.56त्न है. पिछले 24 घंटे में देश में 11,574 मरीज ठीक हुए हैं. अब तक देश में 4,28,08,666 मरीज ठीक हो चुके हैं.

उदयपुर हत्याकांड की निंदा करते हुए बोले अजमेर दरगाह प्रमुख

'भारत में जगह नहीं देंगे तालिबानी मानसिकता को'

जयपुर. उदयपुर में दिन दहाड़े एक दर्जी की हत्या ने हर किसी को हिला दिया है. अब पूरे देश में हर कोई इस घटना की निंदा कर रहा है. उदयपुर हत्याकांड पर अब अजमेर दरगाह दीवान जैनुल आबेदीन अली खान की भी प्रतिक्रिया आई है. उन्होंने इस घटना की निंदा करते हुए कहा भारत के मुसलमान देश में कभी भी तालिबानीकरण की मानसिकता को सामने नहीं आने देंगे. उदयपुर में दो लोगों ने एक दर्जी की हत्या कर दी और ऑनलाइन वीडियो पोस्ट करते हुए कहा कि वे इस्लाम के अपमान का बदला ले रहे हैं. जैनुल आबेदीन अली खान ने एक बयान में कहा, 'कोई भी धर्म मानवता के खिलाफ हिंसा को बढ़ावा नहीं देता है.

सख्त कार्रवाई हो

उन्होंने कहा, 'मैं इस कृत्य को दृढ़ता से निंदा करता हूं और सरकार से उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का अनुरोध करता हूं. भारत के मुसलमान हमारी मातृभूमि में कभी भी तालिबानीकरण की मानसिकता को सामने नहीं आने देंगे.' वहीं जमीयत उलेमा-ए-हिंद के महासचिव मौलाना हकीमुद्दीन कासमी ने भी हत्या की निंदा की. उन्होंने एक बयान में कहा, 'जिसने भी इस घटना को अंजाम दिया उसे किसी भी तरह से सही नहीं ठहराया जा सकता, यह देश के कानून और हमारे धर्म के खिलाफ है.'

हत्या के आरोप में रियाज अख्तरी और गौस मोहम्मद के रूप में पहचाने गए दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है. एक वीडियो क्लिप में, अख्तरी ने घोषणा की कि उन्होंने उस व्यक्ति का सिर काट दिया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धमकी देते हुए कहा कि उनका चाकू उसे भी मिल जाएगा. परोक्ष रूप से, हमलावरों ने पैगंबर मोहम्मद पर एक टिप्पणी को लेकर पार्टी से निलंबित भाजपा नेता नूपुर शर्मा का भी जिक्र किया. दर्जी कन्हैया लाल को हाल ही में स्थानीय पुलिस ने सोशल मीडिया पर उनके द्वारा की गई कुछ टिप्पणियों के लिए गिरफ्तार किया था.

बिलखते हुए कन्हैयालाल की पत्नी बोली- 'हत्यारों को फांसी दो, नहीं तो ये लोग कल किसी और को मार देगा'

उदयपुर. उदयपुर हत्याकांड में जान गंवाने वाले दर्जी कन्हैयालाल के अंतिम संस्कार में भारी संख्या में लोग जुटे। भारी पुलिस सुरक्षा के बीच कन्हैयालाल के अंतिम संस्कार का इंतजाम किया गया। कन्हैयालाल का शव निकलने के दौरान उनकी पत्नी ओर परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल दिखा। कन्हैयालाल साहू की पत्नी ने कहा, 'आरोपियों को फांसी दो, आज उसने हमें मारा है, कल दूसरों को मारेगा।' कन्हैयालाल की पत्नी यशोदा ने बताया कि 10-15 दिनों से धमकी दिया जा रहा था। मार देंगे-काट देंगे की धमकी लगातार मिल रही थी। धमकी देने वाले घर और दुकान दोनों जगह आते थे। उन्होंने बातया कि धमकी देने वाले ज्यादातर दुकान पर ही आते थे। फोन पर भी धमकी देते थे। एक बार दुकान पर क औरत और जेंट्स मुस्लिम लिवास में भी धमकी देने आए थे। यशोदा ने बताया कि कन्हैयालाल ज्यादा बातें घर में जिक्र नहीं करते थे। एक बार घर पर एक जेंट्स आया और धमकी देकर गया कि मार देंगे-काट देंगे। कन्हैयालाल की पत्नी ने कहा कि अशोक गहलोत जी और पीएम नरेंद्र मोदी जी हमारे पति को मारने वाले को मारो। तभी ये लोग सुधरेंगे।

अग्निपथ को युवा विरोधी बता रही थी कांग्रेस, उसके ही सांसद मनीष तिवारी ने लेख किया गुणगान

नई दिल्ली. अग्निपथ स्कीम का पिछले दिनों देशभर में भारी विरोध हुआ। यूपी-बिहार समेत कई राज्यों में युवा सड़कों पर दिखे, कुछ शहरों में आगजनी की घटनाएं भी हुईं। फिलहाल योजना के तहत भर्ती प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और विरोध की आग बुझ चुकी है। कांग्रेस समेत कई विपक्षी दल केंद्र सरकार से इस योजना को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। इस बीच, कांग्रेस के ही सांसद मनीष तिवारी ने अंग्रेजी अखबार 'इंडियन एक्सप्रेस' में लेख लिखकर न सिर्फ 'अग्निपथ' का सपोर्ट किया बल्कि इसे रक्षा सुधारों और आधुनिकीकरण की व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा बताया। ऐसे में कांग्रेस ने झट से अपने सांसद की राय से दूरी बनाते हुए कहा कि उसका यह मानना है कि सेना में भर्ती की यह नई योजना राष्ट्रीय हित और युवाओं के भविष्य के खिलाफ है।

बागी विधायकों के साथ शिंदे भी लौटेंगे

राज्यपाल ने सीएम को बहुमत साबित करने के लिए लिखा पत्र

मुंबई. महाराष्ट्र की उद्धव सरकार पर संकट के बादल तेजी से मंडराने लगे हैं। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने सीएम को पत्र लिखकर बृहस्पतिवार को 11 बजे बहुमत साबित करने का आदेश दिया है। हालांकि इसपर अभी तक शिवसेना की तरफ से कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। राज्यपाल की तरफ से भेजे गए पत्र में कहा गया है कि कार्यवाही गुरुवार शाम 5 बजे तक पूरी करनी है। यह महाराष्ट्र के राज्यपाल द्वारा 30 जून को फ्लोर टेस्ट के लिए भेजे गए एक कथित पत्र के मंगलवार शाम को सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद आया है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को परेशान करने वाला बताते हुए राज्यपाल ने लिखा, 'इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में व्यापक कवरेज हुआ है कि शिवसेना विधायक दल के 39 विधायकों ने महा विकास अघाड़ी सरकार से बाहर निकलने की इच्छा और निर्णय लिया है।' राज्यपाल ने लिखा, 'इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में रिपोर्ट सहित मेरे सामने उपलब्ध सभी सामग्री को ध्यान से देखने के बाद मेरी राय है कि मुख्यमंत्री के बहुमत को साबित करने के लिए एक फ्लोर टेस्ट अनिवार्य है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सरकार सदन के विश्वास से चल रही है।' उचित सुरक्षा व्यवस्था का आह्वान करते हुए राज्यपाल ने लिखा, 'कुछ नेताओं द्वारा दिए गए भड़काऊ बयानों को देखते हुए, मतदान प्रक्रिया की पवित्रता बनाए रखने के लिए और किसी भी कानून और व्यवस्था की स्थिति को बढ़ाने के लिए विधानसभा भवन के बाहर और अंदर पर्याप्त सुरक्षा तैनात की जाएगी।'

कोंटा नगर पंचायत में मंत्री कवासी लखमा ने लगाई सौगातों की झड़ी

सुगम सड़क योजना अंतर्गत 12 सड़क निर्माण कार्यों का किया भूमिपूजन

जोहार छत्तीसगढ़–सुकमा।

उद्योग एवं आबकारी मंत्री कवासी लखमा ने बुधवार को कोंटा वासियों पर सौगातों की झड़ी लगाई। उन्होंने कोंटा जनपद अंतर्गत विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। इसके साथ ही हितग्रहियों को विभिन्न योजनाओं के तहत राशि भी प्रदान की। मंत्री कवासी लखमा ने आर्थिक रूप से कमजोर 154 हितग्राहियों को 5-5 हजार की स्वेच्छानुदान राशि प्रदान की। सुलोचना को बेहतर चिकित्सा के लिए 20 हजार की राशि प्रदान की। इसके साथ ही प्राकृतिक आपदा में हुए मानव क्षति के लिए 4 परिवारों को 4-4 लाख की आर्थिक सहायता राशि एवं पशु क्षति के लिए 13 हितग्राहियों की कुल 4 लाख 36 हजार की आर्थिक सहायता राशि प्रदान की।

तेंदुपत्ता संग्रहण पारिश्रमिक का नगद भुगतान के लिए संग्राहकों ने प्रकट किया आभार, मंत्री को भेंट की गणपति की प्रतिमा

सुकमा जिले में तेंदुपत्ता संग्रहण यहां के ग्रामीण निवासियों के लिए आय के प्रमुख जरियों में से एक है। कोंटा तहसील के तेंदुपत्ता संग्राहकों ने मंत्री कवासी लखमा को बुधवार को गणपति की प्रतिमा भेंट कर जिले में नगद पारिश्रिक भुगतान के लिए धन्यवाद दिया। नक्सल प्रभावित एवं अंदरूनी क्षेत्रों के तेंदुपत्ता संग्राहकों के हितों को ध्यान में रखते हुए मंत्री के प्रयासों की हितग्राहियों ने स्वागत किया। मंत्री कवासी लखमा ने बुधवार को कोंटा में 15 तेंदुपत्ता संग्राहक परिवारों को कुल 2 लाख रुपए की नगद पारिश्रमिक का भुगतान किया। इसके साथ ही मंत्री कवासी लखमा ने कोंटा तहसील अंतर्गत ग्राम बंजामुगड़ा के 17 व्यक्तियों को व्यक्तिगत वन अधिकार का प्रमाण पत्र प्रदान किया। और 75 हितग्राहियों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अन्तर्गत नि:शुल्क धान बीज, उड़द बीज, रागी का वितरण किया। इस अवसर पर आयोजित आम सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने सुकमा जिले में विगत साढ़े तीन वर्षों में हुए विकास कार्यों को दोहराया। उन्होंने कहा की मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जन नायक है। उनके मार्गदर्शन में आज सुकमा सहित पूरे बस्तर संभाग में बदलाव और विकास की बयार बह रही है। पहले जिन क्षेत्रों में आवागमन की कल्पना करनी भी मुश्किल थी। आज वहां पक्की सड़क बनी हैं। शिक्षा के स्तर को बेहतर करने के लिए शासन द्वारा विशेष प्रयास कि, जा रहे हैं। सलवा जुडूम के दौरान नक्सली हिंसा में ध्वस्त स्कूलों का पुन: संचालन किया जा रहा है। नए स्कूल, आश्रम शाला भवन बनाए जा रहे है। आदिवासी लोगो की पहचान आज विश्व पटल पर है। देश विदेश में विश्व आदिवासी दिवस मनाया जाता है। देवगुढ़ी के माध्यम से आदिवासियों की कला, संस्कृति, उनके आस्था के संरक्षण के प्रति संकल्पित होकर कार्य किया जा रहा है। आदिवासियों को वनोपज का सही दाम प्रदान किया जा रहा है। मलेरिया, एनीमिया और कुपोषण कम करने में भी जिले में सफल प्रयास हुए है। उन्होंने आम सभा में टेटराई में आगमी 6 माह में बिजली लगाने की घोषणा की। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष हरीश कवासी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष बोड्डू राजा, सुकमा नगर पालिका अध्यक्ष जगन्नाथ साहू, कोंटा नगर पंचायत अध्यक्ष मौसम जया, कोंटा जनपद अध्यक्ष सुत्रम नागेश सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, एसडीएम कोंटा बनसिंह नेताम, जनपद सीईओ कैलाश कश्यप सहित गणमान्य नागरिक और ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

17 व्यक्तियों को प्रदान किया व्यक्तिगत वनाधिकार प्रमाण पत्र

बस्तर में बह रही विकास और बदलाव की धारा-मंत्री कवासी लखमा

एक नजर

नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर आज

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

मरार समाज तुमगांव व जय मां शीतला आधार युवा शक्ति के द्वारा स्थानीय रेस्ट हाउस सोनल मेडिकल के पास आज गुरुवार को नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। नगर पंचायत उपाध्यक्ष व संयोजक जय मां शीतला आधार युवा शक्ति के संयोजक पप्पू पटेल ने बताया कि इस शिविर में एमजीएम संस्थान के नेत्र रोग विशेषज्ञ द्वारा आंखों की विभिन्न प्रकार की बीमारियों की जांच की जाएगी तथा उचित परामर्श एवं उपचार प्रदान किया जाएगा। जिन लोगों को चश्में की आवश्यकता होगी उन मरीजों की जांच अत्याधुनिक जापानी मशीन द्वारा जांच की जाएगी और चश्में भी बनाए जाएंगे। आयोजक ने बताया कि इस शिविर में पुराने सभी मरीज जो पहले आंख का आपरेशन करवा चुके है तथा अन्य मरीज जिन्हें आखों से संबंधित किसी प्रकार की समस्या हो वे सभी लोग इस शिविर में आकर अपनी जांच करवा सकते है। शिविर का आयोजन रेस्ट हाउस के पास सोनल मेडिकल के परिसर में जांच केंद्र में सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक किया जाएगा।

तहसीलदार की कूटरचना पर अपराध दर्ज करने कोर्ट का आदेश

तहसीलदार महासमुंद के खिलाफ शिकायतों की लंबी लिस्ट

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

फौती व नामांतरण प्रकरण में आदेश पत्रक में कूट रचना कर गायब व नष्ट कर परिवर्तित करने के आरोप में मजिस्ट्रेट चित्रलेखा सोनवानी ने महासमुंद तहसीलदार प्रेमू साहू व मुख्य न्यायिक अन्य के खिलाफ कार्रवाई का आदेश दिया है। तहसीलदार सहित पलिस अन्य व्यक्तियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर अंतिम रिपोर्ट न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए पुलिस को आदेशित किया है। रिपोर्ट कोतवाली थाना प्रभारी प्रस्तुत करेंगे। जानकारी के अनुसार वार्ड क्रमांक-20 रेलवे स्टेशन रोड निवासी अमरजीत सिंह गुरुदत्ता पिता हिम्मत सिंग ने राजस्व मामले में हेर-फेर का न्यायिक मजिस्ट्रेट में परिवादी दर्ज कराया था। उसने बताया कि उसके पिता ने तहसील कार्यालय महासमुंद में फौती व नामांतरण के लिए लगाया था। हिम्मत सिंह के पिता गुरुमुख सिंह के स्वामित्व की भूमि खसरा नंबर 72/73 रकबा 0.280 हेक्टेयर को वारिसानों के नाम दर्ज के लिए आवेदन 28 जुलाई 2021 को लगाया था। इस मामले में तहसीलदार प्रेमू साहू ने 6 अप्रैल वाले आदेश पत्रक को बदल दिया। ऑनलाइन में आदेश पत्र है। लेकिन ऑफ लाइन में गायब है। वहीं 21 मार्च के आदेश पत्रक में हेराफेरी की है। ऑनलाइन में भी हेराफेरी की गई। मामले में मंगलवार को आरोप सिद्ध होने पर तहसीलदार सहित अन्य पर केस दर्ज करने का आदेश दिया गया।

जनसेवा केंद्र में कर्मकारों का होगा नि:शुल्क पंजीयन

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवनलाल चंद्राकर के निवास पर स्थित जनसेवा केंद्र में संगठित कर्मकार व असंगठित कर्मकारों का नि:शुल्क पंजीयन किया जाएगा। वहीं श्रम विभाग से संबंधित कार्यों व योजनाओं का आवेदन भी मुफ्त में होगा। संसदीय सचिव चंद्राकर की पहल से श्रमिकों को योजनाओं का लाभ उठाने में सहुलियत हो सकेगी। मिली जानकारी के अनुसार विधायक निवास में जनसेवा केंद्र संचालित की जा रही है। जहां संगठित कर्मकार व असंगठित कर्मकारों के पंजीयन की सुविधा है। कर्मकारों का पंजीयन नि:शुल्क होगा। उक्त जानकारी देते हुए दुर्गेश साहू ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा महतारी जतन योजना, नौनिहाल छात्रवृत्ति योजना, कर्मकार मृत्य एवं दिव्यांगता सहायता योजना, मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण योजना, दुर्घटना चिकित्सा सहायता योजना सहित श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने के लिए सरकार कई प्रकार की योजनाएं चला रही है। स्वास्थ्य, शिक्षा सहित अन्य सुविधाओं का लाभ पहुंचाकर समाज में उन्हें आगे लाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि श्रम विभाग से संबंधित सभी कार्य, संगठित व असंगठित कार्ड, नवीनीकरण सहित सभी योजनाओं का आवेदन निशुल्क किया जाएगा। उन्होंने श्रमिकों से शासन की योजनाओं का लाभ उठाने का आव्हान किया है। विस्तृत जानकारी के लिए दुर्गेश साहू 9575192655 में सम्पर्क कर सकते है।

10 लाख की लागत से होगा निर्माण कार्य

भिलाई । सेक्टर 4 वार्ड 57 के वार्डवासियों को भिलाईनगर विधायक देवेंद्र यादव ने एक और बेहतरीन सौगात देने वाले है। अपने विधायक निधि से सेक्टर 4 में एस्ट्रोटूफसह एलईडी लाइट सह स्ट्रोटर्फ युक्त बैडमिंटन कोर्ट का निर्माण किया जाएगा। जिसका ड्राइंग डिजाइन तैयार करने के साथ ही प्रशासनिक स्वीकृति होने के साथ अब जल्द ही इसका भूमिपूजन कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

राजहरा का डेम साइड खो रहा है अपना अस्तित्व

दल्लीराजहरा । राजहरा में निर्मित तालाबों का तो बुरा हाल है क्योंकि इनको संजोने संवारने के लिए जवाबदार लोगों के पास समय नहीं है या फिर फंड नहीं है। दूसरा एक बड़ा जल स्रोत डेम साइड भी अपनी दुर्दशा का आंसू बहा रहा है ।यह डेम पूरी तरह घास और जलकुंभियों से ढक गया है। देखने से ऐसा महसूस हो रहा है यहां एक बड़ा डेम ना होकर घास का मैदान है। क्योंकि दूर-दूर तक इसमें पानी का एक कतरा भी नजर नहीं आ रहा है । जनप्रतिनिधियों की यही उदासीनता रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह जल स्रोत सचमुच में मैदान में तब्दील हो जाएगा। 1973 - 74 में बना डेम साईड का जल स्रोत राजहरा में बीएसपी के द्वारा टाउनशिप के क्वार्टरों में पेयजल के लिए भी इसका उपयोग होता है। दल्ली राजहरा को ऐसे जनप्रतिनिधि की अति आवश्यकता है जो इस प्राकृतिक स्रोतों को सहेज कर रख सके । जनप्रतिनिधि दल्ली राजहरा के विकास के बारे में सोचें। ताकि आने वाले समय में पानी की संकट होती है उससे बचा जा सके । डेम साईड में डम्प हुए मटेरियल को निकालकर उसमें सफाई की आवश्यकता है। जिससे साफ पानी उसमें फिर से भर सके। आज देखने से ऐसा लगता है कि डेम पूरा मिट्टी और गाद से भर गया है।

एक समय था जब राजहरा के गणेश उत्सव एवं दर्गा उत्सव के समय भगवान गणेश और माँ भगवती की मूर्ति का विसर्जन इसी डेम में होता था । लोग इसके किनारे पिकनिक मनाने आते।

दल्ली राजहरा से डौंडी की ओर जाने वाले तथा महामाया मंदिर के दर्शन करने जाने वाले लोग यहां रुक रुक कर एक बार डेम को जरूर निहारते थे। साफ स्वच्छ पानी के बीच डेम साइड के किनारे दाएं तरफ सफेद रंग के फूल देखने में ही मनोरम दृश्य बड़ा सुंदर लगता था। लेकिन आज यह स्थिति ठीक इसके विपरीत है बीएसपी प्रबंधन भी इस डेम की साफसफाई के लिए गंभीरता से ध्यान नहीं दे रहा है।

श्रम दान व केक काटकर मनाया मोहन मरकाम का जन्मदिन

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष माननीय मोहन मरकाम के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में 3 वर्ष के कार्यकाल पूर्ण करने के अवसर पर महासमुंद कांग्रेस कमेटी के समस्त कांग्रेसजनों ने केक काटकर एवं नवनिर्मित राजीव भवन में चल रहे निर्माण कार्य में अपना श्रमदान करके माननीय मोहन मरकाम जी को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित किया। माननीय मोहन मरकाम के प्रदेश अध्यक्ष बनने के पश्चात प्रदेश कांग्रेस कमेटी एवं छत्तीसगढ़ में एक नए जोश खरोश के साथ जो कार्य किया गया। जिससे छत्तीसगढ़ कांग्रेस कमेटी ने मजबूती से कार्य किया। संगठन और अधिक मजबूत हुई है एवं मैदानी क्षेत्र के अलावा आदिवासी क्षेत्र का भी विकास समान रूप से हुआ है। जब से मोहन मरकाम प्रदेश अध्यक्ष बने हैं तब से एक लोकसभा एवं 4 विधानसभा के उपचुनाव में अत्यधिक वोटो से प्रत्याशी विजयी हुई है तथा छत्तीसगढ़ के नगर निगम में महापौर वा नगरपालिका अध्यक्षों के रूप में चुनाव जीतना कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशियों का बोलबाला रहा तथा अधिकतर नगरी निकाय क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कांग्रेस के प्रत्याशी की जीत हुई। मोहन मरकाम के सरल स्वभाव एवं कठोर मेहनत का नतीजा है की आज छत्तीसगढ़ पूरे भारत भर में कांग्रेस पार्टी का एक मजबूत संगठन दिखता है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा जितने भी कार्यक्रम छत्तीसगढ़ कांग्रेस कमेटी को प्रदर्शनए धरनाए घेराव आम जनता के समस्याओं के लिए जो भी केंद्रीय कमेटी के द्वारा कार्यक्रम निर्धारित किया गया। उन्हें सफलतापूर्वक जमीनी रूप में कार्यान्वित करने का श्रेय प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम को जाता है कांग्रेस पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्षों का अनुभवो का लाभ लेते हुए माननीय मरकाम ने एक सफल कार्यकाल कि 3 वर्ष जो कि बेमिसाल रहा उसे पूर्ण किया तथा भविष्य में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा दी गई जिम्मेदारियों का निर्वहन करने को भी पूर्णता सक्षम हैं। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष को पूरे जिले की ओर से बधाई एवं उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए। शुभकामनाएं प्रेषित किया गया। उक्त कार्यक्रम में कांग्रेस कमेटी महासमुंद के खिलावन बघेल शहर अध्यक्ष,संजय शर्मा प्रभारी महामंत्री, सोमेश दवे, गुरमीत चावला, सुरेश द्विवेदी, विजय साव, निखिलकांत साहू, अन्नू चंद्राकर,दसोदा ध्रुव, भूमिका ध्रुव, अनवर हुसैन,जावेद चौहान,प्रदीप चंद्राकर,शकील खान, हर्षित चंद्राकर, नितेंद्र बेनर्जी, गिरजा शंकर चंद्राकर, बसंत चंद्राकर, डॉ तरुण साहू, आरिफ बेग, रामजी साहू, बादल, उमेश रावल, भरत लाल साहू, मेहुल सूचक, गोपी पाटकर, नरेंद्र चंद्राकर, जाकिर रजा, खेमराज ध्रुव, निर्मल जैन, सतीश कन्नौजे आदि पदाधिकारीगण कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

जिला स्तरीय एनीमिया मुक्त कोरबा कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

एनीमिया की रोकथाम के लिए बच्चों, गर्भवती-शिशुवती माताओं को दी गयी आयरन की दवाई

कोरबा । जिले में बच्चे एवं महिलाओं में खून की कमी दूर करने के लिए जिला स्तरीय एनीमिया मुक्त कोरबा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ निगम क्षेत्र के स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल पंपहाउस, आंगनबाडी केन्द्र पंपहाउस एवं आंगनबाडी केन्द्र गेरवाघाट से बच्चों को आयरन सिरप एवं टेबलेट खिलाकर किया गया। इस दौरान सीएमएचओ डॉ. बीबी बोर्डे, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग एमडी नायक, जिला शिक्षा अधिकारी जी.पी. भारद्वाज, विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी संजय अग्रवाल एवं पंपहाउस स्कूल के प्राचार्य विवेक लाण्डे मौजूद रहे। जिले में छह माह से पांच वर्ष तक के बच्चे, गर्भवती माता, शिशुवती माता एवं छह से 18 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं में खून की कमी के ईलाज के लिए जिले में विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं। इस अभियान के तहत् छह वर्ष से 18 वर्ष तक के स्कूली बालक-बालिकाओं को प्रति सप्ताह एक आयरन टेबलेट स्कूल में ही प्रदान किया जाएगा। इसके अलावा सभी आंगनबाडी केन्द्रो में छह माह से 59 माह तक के बच्चों को प्रति सप्ताह आयरन सिरप पिलाया जाएगा। गर्भवती, शिशुवती माताओं को प्रतिदिन एक आयरन गोली तथा 11 से 18 वर्ष तक के शाला त्यागी किशोरियों को प्रति सप्ताह एक आयरन गोली खाने के लिए दिया जाएगा।

राज्य शासन के कर्मचारियों को केन्द्र शासन के समान देय व महंगाई भत्ता की स्वीकृती के लिए कलेक्टर के नाम एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

जोहार छत्तीसगढ़–सुकमा।

राज्य शासन के कर्मचारियों को केन्द्र शासन के समान देय व महंगाई भत्ता के लिए मांग को लेकर बजार पारा स्थित मैदान में एक दिवशीय धरना प्रदर्शन कर कलेकटर के नाम एसडीएम को ज्ञापन सौंपते हुए संदर्भित आदेश क्रमांक 1, के द्वारा राज्य शासन के कर्मचारियों को 12: महंगाई भत्ता से केंद्र शासन के समान देय तिथि से स्वीकृत किया गया था। अवगत होंवे कि संदर्भित आदेश क्रमांक 2, के द्वारा राज्य शासन के कर्मचारियों को 17: महंगाई भत्ता से स्वीकृत किया गया था। जबकि केन्द्र शासन के द्वारा 17: महंगाई भत्ता से स्वीकृत किया। गया था। जिसके फ लस्वरूप राज्य शासन के कर्मचारियों को प्राप्त वेतन में आर्थिक क्षति हुआ था। जो कि आज पर्यन्त हो रहा है। ज्ञात हो कि फेडरेशन के द्वारा को आपसे हुए वार्ता में पक्ष रखा गया था। जिस पर बाद में निर्णय लिये जाने का आश्वासन दिया गया था। लेकिन राज्य शासन ने निर्णय नहीं लिया हैं। लेख है कि आदेश क्रमांक 3, के कर्मचारियों को सातवें वेतनगान पर 22: महंगाई भत्ता स्वीकृत किया गया है। जोकि केंद्र शासन द्वारा महंगाई भत्ता से स्वीकृत किया गया है, जोकि केंद्र शासन द्वारा महंगाई भत्ता स्वीकृति हेतु लेख है कि केंद्र शासन द्वारा 17: से 28: महंगाई भत्ता से प्रभावशील किया था। जिसमें देय तिथि 4: का 3: एवं का 4: इस तरह कुल 11: सम्मिलित है।

केरलापाल के बच्चे पढ़ेंगे नए स्कूल भवन में

उद्योग मंत्री कवासी लखमा ने किया नवीन प्राथमिक शाला का लोकार्पण

जोहार छत्तीसगढ़–सुकमा।

सुकमा विकासखंड अंतर्गत ग्राम केरलापल में उद्योग एवं आबकारी मंत्री कवासी लखमा ने बच्चों को नवीन स्कूल भवन की सौगात दी। उन्होंने जिला खनिज संस्थान न्यास निधि से 49.99 लाख की लागत से निर्मित नवीन प्राथमिक शाला भवन का फीता काटकर लोकार्पण किया। वर्तमान समय में प्राथमिक शाला केरलापाल में 70 बच्चे दर्ज है। नए दाखिले चालू है। इस अवसर पर सुकमा जिला पंचायत अध्यक्ष हरीश कवासी सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, जिला शिक्षा अधिकारी नितिन डडसेना, विकासखंड शिक्षा अधिकारी रीना सिंह एवं शिक्षक गण तथा स्कूली छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

बच्चों को फूल माला पहनाई, गणवेश प्रदान किए

मंत्री कवासी लखमा ने नव प्रवेशित बच्चों को फूल माला पहनाई और गणवेश प्रदान कर शाला प्रवेश पर बधाई दी। उन्होंने बच्चों को खूब मन लगाकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया। बच्चों एवं उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए मंत्री कवासी लखमा ने कहा कि बस्तर संभाग में शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिकता से कार्य किया जा रहा है। सुकमा जिले में पिछले 16 वर्षों से बंद पड़े स्कूल का पुन: संचालन किया जा रहा है। साथ ही नवीन शाला भवन भी बनाए जा रहे हैं। ताकि सुकमा के बच्चे भी शिक्षा से निरंतर जुड़े रहे। उन्होंने सरपंच, शिक्षकों सहित सभी बच्चों को बधाई दी।

घुमरगुड़ा पंचायत में मनरेगा कार्य में गड़बड़ी सहित विकासमद में भ्रष्टाचार के आरोप

शिकायत के बाद पंचायत पहुंचा जांच दल जांच के बाद सौंपेंगे रिपोर्ट

जोहार छत्तीसगढ़–देवभोग।

देवभोग ब्लाक के घुमरगुड़ा पंचायत इन दिनों मनरेगा कार्यो में गड़बड़ी और 13वें 14वे तथा 15वें वित्त विकासमद में भष्ट्राचार को लेकर सुर्खियों में है। भ्रष्टाचार के मामले को लेकर यहां के जनपद सदस्य दर्शन सोनी ने एसडीएम से शिकायत कर कारवाई की मांग की थी।

जोहार छत्तीसगढ़ विशेष खबर

जिस पर एसडीएम टीकाराम देवांगन ने एक चार सदस्यी जांच दल गठित करने के निर्देश देवभोग सीईओ को दिये थे। सीईओ एमएल मण्डावी ने आरईएस एसडीओ राधाकृष्ण शर्मा के नेतृत्व मे तकनिकी सहायक खूबलाल ध्रुव,कुरेन्द्र बघेल, करारोपण अधिकारी रजक वाली जांच दल को पंचायत भेज कर जांच रिपोर्ट सौंपने के आदेश जारी किये थे। जिसकी कल प्राथमिक जांच पूर्ण कर लिये गये है। हालांकि अभी जांच रिपोर्ट नहीं सौंपे गये है पर जांच दल तीन दिन के भीतर इसकी जांच रिपोर्ट तैयार कर सौंपने की बात कही है।

किन आरोपों की जांच किये गये

क्षेत्र क्रमांक 4के जनपद सदस्य दर्शन सोनी ने पंचायत पर बिना प्रस्ताव के मनरेगा के कार्यो में भारी गड़बड़ी करने और पंचायत को मिलने वाले विकास मद में व्यापक भ्रष्ट्राचार करने का आरोप लगाया है। वही जनपद सदस्य ने बिना कार्य किये राशी आहरण करने का भी गंभीर आरोप लगाया है। इस प्रकार बीते दो वर्षों में सरपंच सचिव और रोजगार सहायक ने शासन को लाखो का चुना लगाया है।

जांचदल तालाब को मापा पंचनामा तैयार कर औपचारिकता निभाकर वापस लौट आया

मनरेगा के जिस लिटीगुरिया और सपुरो पति बोतका के निजी तालाब पर फर्जीवाड़ा होने का आरोप था जांच दल पंचायत पहुंचकर उसको मापा औपचारिकता निभाया विकासमद के मामले पर बिना जांच किये वापस लौट आये। बात जब विकास मद के जांच का आया तो सचिव ने कार्यो के एमबी फाइल गरियाबंद जिला मुख्यालय में होना बताया जांच दल भी मान गये जबकि जांच दरम्यान शिकायत कर्ता और पंचायत प्रतिनिधियों के बीच इस बात को लेकर तकरार होता रहा।

आदेश के बाद जांच दल को जांच में पहुंचने में लगे दस दिन

शिकायत कर्ता जनपद सदस्य ने 6जून को इसकी शिकायत एस डीएम और सीईओ को की थी। शिकायत पर एसडीएम ने 18 जून को मामले के जांच आदेश जारी किये पर सीईओ द्वारा गठित जांच दल को जांच शुरू करने दस दिन लग गये। जांच शुरू करने में हुयी विलम्ब को लेकर शिकायत कर्ता ने संदेह व्यक्त किये है। प्रारम्भिक जांच कर के लौटे है अभी फाइल खंगालना देखते है स्थल निरीक्षण और माप का कार्य पूर्ण कर लिये गये है यदि गड़बड़ी पायी जाती है तो मूल्यांकन कर वसूली के लिये रिपोर्ट सौंपी जायेगी।

एक नजर

30 लीटर अवैध कच्ची महुआ शराब सहित 3 आरोपी गिरफ्तार

जोहार छत्तीसगढ़–रतनपुर।

30 लीटर अवैध कच्ची शराब सहित तीन आरोपी को रतनपुर पुलिस ने पकड़ा कल रात्रि करीब 9 बजे रतनपुर पुलिस को मूखबिर द्वारा सूचना मिला कि श्यामलाल साहू ग्राम खैरा अपने घर में अवैध रूप से महुआ शराब बिक्री हेतू रखा हुआ है के सूचना तस्दीक हेतू पुलिस ग्राम खैरा घटनास्थ्ल ग्राम खैरा पहुंचकर श्यामलाल साहू के घर रेड कार्यवाही की जहां तीन व्यक्ति एक टब में शराब रखकर पत्नी में पैक करते हुये मिले जिनका नाम पता पुछने पर अपना नाम,श्यामलाल साहू खैरा पीपरचौक,रामधुन यादव निवासी खैरा सूरज कंवर निवासी बाबापारा फूलवारीपारा थाना पाली जिला कोरबा का होना बताया जो तीनों घर के आंगन में एक प्लास्टिक के टब में रखे अवैध देशी महुआ शराब को पत्नी में पैक करते मिले जिनके कब्जे से करीब 30 लीटर देशी कच्ची महुआ शराब कीमती 3000 को मुताबिक जब्ती पत्रक समक्ष गवाहों के जप्त कर सील बंद कर कब्जा पुलिस लिया गया। धारा 34;2, आबकारी एक्ट के तहत कायर्वाही कर तीनो आरोपियों को रिमांड पर भेजा गया।

आंदोलन टालने प्रबंधन व भू-विस्थापितों की बैठक विफल, कल होगा महाघेराव

कोरबा । लंबित रोजगार, मुआवजा, पूर्व में अधिग्रहित जमीन की वापसी, प्रभावित गांव के बेरोजगारों को खदान में काम देने, महिलाओं को स्वरोजगार समेत 16 सूत्रीय मांग को लेकर महाप्रबंधक कार्यालय का घेराव टालने द्विपक्षीय वार्ता आयोजित की गई। बैठक में सकारात्मक पहल नहीं होने पर भू-विस्थापितों ने आंदोलन यथावत रखने की घोषणा कर दी। इसके साथ ही आंदोलन को सफ्ल बनाने गांव में बैठक शुरू कर दी।

छत्तीसगढ़ किसान सभा, रोजगार एकता संघ द्वारा एसईसीएल की खदानों से प्रभावित भू विस्थापितों किसानों के पुनर्वासए भू-विस्थापितों को काबिज भूमि का पट्टा देने के साथ 16 मांगो को लेकर सीएमडी के नाम ज्ञापन सौंप कर 30 जून को महाघेराव की घोषणा की। साथ ही गांव में बैठक करने के साथ घर घर पर्चे बांटे जा रहा है। मंगलवार को आंदोलन टालने के लिए किसान सभा के प्रतिनिधि मंडल के साथ एसईसीएल प्रबंधन ने बैठक हुई। इसमें प्रबंधन ने आंदोलन स्थगित करने कहा। बैठक में एसईसीएल की ओर से गेवरा महाप्रबंधक एसपी भाटी, कार्मिक प्रबंधक एस परीडा, अमिताभ तिवारी, नरसिम्हा राव एवं किसान सभा के प्रतिनिधि मंडल की ओर से जिलाध्यक्ष जवाहर सिंह कंवर, जय कौशिक, पुरषोत्तम, माकपा जिला सचिव प्रशांत झा, रोजगार एकता संघ के दामोदर श्याम, रेशम, सनत, रघु, सुमेन्द्र सिंह उपस्थित रहे। इस दौरान प्रतिनिधि मंडल ने प्रबंधन के आंदोलन स्थगित करने के प्रस्ताव को ठुकराते कहा कि मांगो पर निर्णय लेने का अधिकार आपके पास नहीं है, तो वार्ता करने का औचित्य नहीं। बिलासपुर के अधिकारियों को भू-विस्थापितों से बात करने के लिए आना ही होगाए तभी वार्ता होगी। इसके साथ ही प्रतिनिधि मंडल बैठक छोड़कर बाहर निकल गए। वार्ता विफ्ल होने के बाद 30 जून को प्रस्तावित महाघेराव को सफ्ल बनाने के लिए प्रभावित गांव जाकर घर-घर में पर्चे बांटना शुरू कर दिया गया। साथ ही नुक्कड़ सभा कर आंदोलन में शामिल होने के लिए लोगों से आह्वान किया गया।

नक्सलियों ने ग्राम पंचायत मोरमेड के सरपंच की गला घोटकर कर दी हत्या

बीजापुर । जिले के तोयनार थाना क्षेत्र के ग्राम मोरमेड मे कल देर शाम नक्सलियों ने अपनी तालीबानी सत्ता के वजूद को बनाये रखने के लिए एक बार फिर से ग्राम पंचायत मोरमेड के सरपंच प्रतिराम कुड़ियम की गला घोटकर हत्या कर दी है। मिली जानकारी के अनुसार नक्सली मृतक के परिवार के सदस्यों को अपना निशाना बनाते रहे हैं, इससे पहले भी परिवार के 02 सदस्यों को नक्सलियों ने मुखबिरी का आरोप लगाते हुए मौत के घाट उतार दिया था। सरपंच की नक्सलियों द्वारा हत्या किये जाने की पुष्टि बीजापुर एसपी सुनील शर्मा ने किया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम मोरमेड मे कल देर शाम ग्रामीण वेशभूषा में नक्सलियों का एक ग्रुप गांव पहुंचा और ग्राम पंचायत मोरमेड के सरपंच प्रतिराम कुड़ियम को अपने साथ अगवा करके जंगल की ओर ले गए जिसके बाद नक्सलियों ने सरपंच की गला घोटकर उसकी निर्मम हत्या कर नक्सली जंगल की ओर फरार हो गए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यशाला सशिम में संपन्न

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

रायपुर विद्या भारती छत्तीसगढ़ प्रांत योजना अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यशाला सभी जिलों में संपन्न हो रहा है। इसी कड़ी में कोरिया जिला के नगरीय एवं ग्रामीण विद्यालय के आचार्यों का दो दिवसीय कार्यशाला 25 एवं 26 जून को सरस्वती शिशु मंदिर सरभोका जिला कोरिया में संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में कोरिया जिला के साथ साथ सरगुजा जिला, बलरामपुर जिला, सूरजपुर जिला के अप्रशिक्षित आचार्य, प्रधानाचार्य, प्राचार्य भी सामिल थे। 25 जून को उद्घाटन सत्र में नरेश जायसवाल प्रांत प्रमुख वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छग एवं कोरिया जिला प्रभारी साथ में राजेश मिश्रा विभाग समन्वय जगदीश यादव जिला समन्वयक, कृष्णा प्रजापति प्राचार्य मंच में विराजमान थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यशाला में 15 नगरीय विद्यालय से 65 पुरुष आचार्य एवं 36 महिलाएं कुल 101 की संख्या रही तथा 14 ग्रामीण विद्यालय से 30 पुरुष आचार्य और 27 महिलाएं कुल योग 57 की उपस्थिति रही। इस प्रकार कुल 158 आचार्य प्राचार्य ने कार्यशाला में भाग लिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के इस कार्यशाला में उद्घाटन एवं समापन को छोड़कर 6 काल खंडों के माध्यम से विभिन्न विषयों पर कार्यशाला संपन्न हुआ। समापन अवसर पर हनुमान प्रसाद अग्रवाल जिला प्रतिनिधि एवं नरेश जायसवाल प्रांत प्रमुख का सारगर्भित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस कार्यशाला में राजेश मिश्रा, जगदीश यादव, प्रकाश साहू, मनोज दुबे, चौतराम नामदेव, ज्योत्सना सिंह आदि प्रशिक्षकों के द्वारा विषयों का प्रतिपादन हुआ। कार्यशाला में बैठक, आवास, भोजन, जलपान आदि व्यवस्था प्रकल्प के कार्यकर्ताओं ने किया।

सड़क पर मवेसियों का कब्जा

जोहार छत्तीसगढ़–बेमेतरा।

छेरकापुर के सड़को पर सुबह से साम तक मावेशी का व जैसे अन्य जगहों पर बैठे रहते हैं। बड़े गाड़ी, मोटरसायकिल वालों को होता है। आने जाने में परेशानी पशु मालिक भी जिम्मेदार है मावेशियों से हित साधनो के बाद इन्हें सड़कों पर आवारा घूमने के लिए इस तरह छोड़ दिया जाता है। जैसे मावेशियों से उनका कोई नाता न हो किसी भी प्रकार की दुघटना के बाद मावेशियों मालिक मुआवजा के लिए जानवरो पर दावा करते है ग्राम के सड़कों पर घूमते आवारा मावेशी वाहन चालाको व राहगीरों के लिए खतरा बन सकता है यह समस्या छेरकापुर व नवागढ़ मार्ग रोड पर दिखाई देती है बरसात शुरु होने के बाद भी सड़क पर मावेशियों का जमावड़ा बड़ गया है आये दिन होते रहते है हादसे नवागढ़ मार्ग रोड में साम होते ही मवेसियों का डेरा सड़क पर लग जाता है मोटरसायकिल में चलने वालों को भी बहुत हि परेशानी होती है छेकापुर से नवागढ़ मार्ग रोड पर बीचो बिच सडक पर ऐसे घूम रहे हैं मावेशी।

शासकीय स्कूल मऊ के छात्र-छात्राओं को बाल सुरक्षा पर आधारित अभिव्यक्ति अभियान के माध्यम से किया जागरूक एवं अपराध के प्रति सजग रहने का दिया संदेश

जोहार छत्तीसगढ़–बेमेतरा।

पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन एवं अति.पुलिस अधीक्षक बेमेतरा पंकज पटेल, अति,पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन, एसडीओपी बेरला तेजराम पटेल, एसडीओपी बेमेतरा राजीव शर्मा के मार्गदर्शन में जिले में थाना। चौकी प्रभारियों के द्वारा बाल सुरक्षा पर आधारित अभिव्यक्ति अभियान एवं चेतना अभियान के माध्यम से महिला शसक्तिकरण, महिला सुरक्षा, सायबर क्राईम एवं यातायात संबंधी जानकारी अभियान चलाया जा रहा हैं जिसके तहत् 28 जून 2022 को थाना चंदनू क्षेत्र अंतर्गत ग्राम मऊ शासकीय हाई स्कुल में छात्र/छात्राओ को थाना चंदनू प्रभारी निरीक्षक प्रमोद शर्मा, उप निरीक्षक अंजोर साहू एवं अन्य स्टाफ ने बताया कि किसी के भी बहकावे में न आने, यदि कोई अनजान व्यक्ति कोई खाने पीने का सामान दे या किसी भी प्रकार का कोई लालच दे। उसके झांसे में नहीं आने, तथा साइबर अपराध, चिटफंड, फर्जीकाल ठगी, एटीएम ठगी, ऑनलाईन ठगी, फेसबुक, से संबंधित अपराधों के संबंध में जानकारी दी गई। हमें सदैव जागरूक रहने और घटना घटित होने पर तत्काल पुलिस को सूचित करने अपील की गई। पुलिस आपके सहयोग के लिए बराबर तैयार है और उन्हे कहीं भी कोई तकलीफ नहीं आने देगी। वह निडर होकर जरूरत पर पुलिस का समुचित सहयोग ले। पुलिस हर समय मदद के लिए तैयार है। साथ ही यातायात के नियमों का हमेशा पालन किये जाने एवं सभी को हेलमेट पहनने के लिए प्रोत्साहित किया गया। साथ ही महिलाओ एवं बालिकाओं पर हो रहे लैंगिक शोषण के कारण एवं बचाव से संबंधित तथा महिलाओ पर हो रहे अपराध एवं मोबाइल से सम्बन्धित अपराध एवं उनके रोकथाम की जानकारी दी गई।

पुलिस ने नशा मुक्ति के खिलाफ अभियान चलाकर लोगों को किया जागरूक

जोहार छत्तीसगढ़–बेमेतरा।

पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन एवं अति.पुलिस अधीक्षक बेमेतरा पंकज पटेल, अति.पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन, एसडीओपी बेरला तेजराम पटेल, एसडीओपी बेमेतरा राजीव शर्मा के मार्गदर्शन में जिले में थाना, चौकी प्रभारियों के द्वारा नशा मुक्ति के खिलाफ अभियान चलाकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है इस अभियान तहत 28 जून 2022 को थाना दाढी, नवागढु एवं चौकी देवकर स्टाफ उप निरीक्षक टीआर कोसिमा, सउनि सुभाष सिंह, प्रधान आरक्षक मोहन साहू, यागेश्वर देशमुख एवं अन्य स्टाफ के द्वारा दाढी के चौक चौराहो, ग्राम बचेडी के ग्रामीणों एवं नवागढ़ में आमजनों को बताया कि बीडी, सिगरेट,शराब,गांजा जैसे नशा शारीरिक समस्याओं के साथ ही आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी नुकसान का कारण बनता है। लोगो को नशा नहीं करने का संकल्प व इसके दुष्प्रभाव के बारे में भी बताया गया।

नशे से ग्रसित व्यक्ति तनाव में रहता है और उसे मानसिक परेशानियां घेर लेती हैए इसके अलावा उसे स्वास्थ्य परेशानियां भी होती है और नशे में अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है। क्योकि ऐसे ही व्यक्ति अपराधों को बढ़ावा देता है। इसलिए हमें नशे से दुर रहना चाहिए। गुडाखु, तंबाकु, गुटका के लगातार सेवन से मुह धीरे-धीरे कम खुलने लगता है जो कि कैंसर का कारण बनता है किसी भी प्रकार का नशा को छोड़ने के लिए व्यक्ति को दृढ संकल्पित होने की आवश्यकता है। इसके लिए युवाओं को आगे आकर समाज में जागरूकता लाने की आवश्यकता है ताकि समाज में सामाजिक मधुरता बना रहे। साथ ही बेमेतरा पुलिस द्वारा मादक पदार्थों की तस्करी करने वालो पर कड़ी नजर रखी जा रही है एवं अवैध शराब बिक्री करने वालो पर सूचना मिलते ही पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही किया जा रहा है।

तहसील अधिकारी एवं कर्मचारी सामूहिक अवकाश पर रहे

अनुविभागीय अधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा

जोहार छत्तीसगढ़–घरघोड़ा।

घरघोड़ा केंद्र के समान महंगाई भत्ता एवं केंद्र के समान गृह भाड़ा भत्ता की मांग को लेकर घरघोड़ा गए तहसील के अधिकारी एवं कर्मचारी 1 दिन का सामूहिक अवकाश लेकर हड़ताल पर रहे कर्मचारी भवन में प्रातः 10 बजे से ही अधिकारी एवं कर्मचारियों का जमावड़ा चालू हो गया।

जोहार छत्तीसगढ़ विशेष खबर

सभी विभाग के अधिकारी और कर्मचारी बहुत बड़ी संख्या में एकत्र हुए सर्वप्रथम सभा को तहसील संयोजक संतोष पांडे ने संबोधित किया बताया कि पहली बार महंगाई भत्ता को मांग को लेकर अधिकारी एवं कर्मचारियों को सड़क पर आना पड़ा है जो कर्मचारी अधिकारियों का मूलभूत अधिकार है केंद्र के कर्मचारी एवं राज्य के कर्मचारी के लिए महंगाई अलग-अलग नहीं है तो फिर महंगाई भत्ता अलग-अलग क्यों, राजपत्रित अधिकारी संघ के अध्यक्ष केपी पटेल ने सभी को हर आह्वान में एकजुट रहने का आह्वान किया वरिष्ठ नेता अभिनव सिंह भी सभा को संबोधित किया मंगलेश्वर महंत ने सभी कर्मचारियों को फेडरेशन के आह्वान पर सत्र होने की बात कही रोहित डनसेना ज्ञापन का पाठ किया। मंच पर डिप्लोमा अभियंता संघ के कमलेश गुप्ता सुरेंद्र होता राजेंद्र महंत पूनम मित्तल, तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के अध्यक्ष अश्वनी दर्शन,अनिल चेलक विनोद मैहर सुंदर मणि, विजय पंडा, महेंद्र साहू, संतोष सिंह, ममता पुरसेथ, मनोज प्रधान सूरज पैंकरा बलराम हरिश्चंद्र, रामकुमार वीर सिंह देवांगन, एवं हर विभाग से अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कर्मचारी भवन से रैली के माध्यम से तहसील कार्यालय पहुंच कर अनुभाग अधिकारी डिकेश पटेल जी को प्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया इस अवसर पर तहसीलदार अनंत एवं सोनी उपस्थित थे। घरघोड़ा तहसील में समस्त कार्यालयों में ताला बंद है कोई भी काम नहीं हो रहा है कर्मचारियों एवं अधिकारियों में महंगाई भत्ता ना मिलने पर बहुत आक्रोश देखा गया 17: महंगाई भत्ता अधिकेंद्र से कम है जुलाई माह में संभवत केंद्र महंगाई भत्ता घोषित कर सकता है जिससे और कमी हो जाएगी इसलिए केंद्र की घोषित तिथि से छत्तीसगढ़ के अधिकारियों कर्मचारियों को महंगाई भत्ता दिया जाए। अगर अभी भी शासन केंद्र के समान महंगाई भत्ता घोषित नहीं करती है तो 25 जुलाई से 29 जुलाई तक 5 दिनों का हड़ताल पूरे प्रदेश में किया जाएगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक नारायण बाईन, द्वारा आसमा पब्लिसर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,जयस्तंभ चौक रायपुर से मुद्रित कर मेडरमार कालोनी, जिला-रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।
संपादक –**नारायण बाईन,** फोन –फैक्स 07766299001, मो, 9479177711, 7489419194 Email-joharchhattisgarh@gmail.com, joharchhattisgarh@yahoo.co.in

एक नजर

एक नजर

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक नारायण बाईन, द्वारा आसमा पब्लिसर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,जयस्तंभ चौक रायपुर से मुद्रित कर मेडरमार कालोनी, जिला-रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।
संपादक -**नारायण बाईन,** फोन -फैक्स 07766299001, मो, 9479177711, 7489419194 Email-joharchhattisgarh@gmail.com, joharchhattisgarh@yahoo.co.in